RESEARCH RIVAL **ISSN: 2456-1096**
(A Multi-Disciplinary Peer-Reviewed and Refereed Bi-Annual Research Journal) **Vol. 10, Issue 2**
July-December 2024

भारतीय ज्ञान परम्परा में गवेषणा

डॉ॰ सुखबीर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत, राजीव गांधी राजकीय महाविद्यालय साहा (अंबाला)
E-mail: sukhbirkarasan@gmail.com

शोध पत्र सार :
आज के समय में शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित यदि कोई शब्द है तो वह है रिसर्च। यदि मैं ऐसा कहूं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मानवीय मनीषा नित नई–नई विधाओं का, तथ्यों का एवं तत्वों का अन्वेषण कर रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार इस संसार में सभी पदार्थ ईश्वरकृत है तथा पूर्व से ही विद्यमान है। रिसर्च शब्द जिसका शाब्दिक अर्थ होता है पुनः अन्वेषण या खोजना। खोजी वह वस्तु जाती है जो कहीं किसी कारण से गुम हो गई हो। भारतीय ज्ञान परंपरा में रिसर्च के लिये एक शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसको गवेषणा कहते हैं। वस्तुतः गवेषणा सभी प्रकार की रिसर्च, इनोवेशन, संकल्पनाओं, धारणाओं, कल्पनाओं तथा उनसे प्राप्त होने वाले सभी प्रकार के सिद्धांतों का नवनीत रूप है। गवेषणा शब्द अपने आप में अत्यंत विस्तृत एवं अभिव्यापक है। मानवीय मनीषा का ऐसा कोई भी कोना नहीं है जहां तक गवेषणा शब्द की व्याप्ति ना होती हो। आज के समय में इस गवेषणा शब्द को जानना नितांत आवश्यक हो जाता है क्योंकि भारतीय परंपरा में यह माना जाता है कि प्रत्येक शब्द अपने साथ एक जीवन दर्शन को आत्मसात किए हुए रहता है तथा वह स्वयं भी जीवंत होता है। गवेषणा शब्द के 21 संभावित अर्थ होते हैं जो की इस पत्र में मेरे द्वारा विश्लेषित किए गए हैं।

शोध पत्र में प्रयुक्त विशेष शब्दः– गौः, ग्मा, ज्मा, क्ष्मा, क्षा, क्षमा, क्षोणिः, क्षितिः, अवनिः, उर्वी, पृथ्वी, मही, रिपः, अदितिः, इला, निर्ऋतिः, भूः, भूमिः, पूषा, गातु, गोत्रा
(उपर्युक्त सभी 21 शब्द (गौ, गाय, पृथिवी, सरस्वती, किरण, जिह्वा, प्रकाश आदि के पर्यायवाची हैं) इनका उपयोग गवेषणा शब्द के पूर्व पद के अर्थ हेतु किया गया है।

गवेषणाः
गवेषणा शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के रिसर्च शब्द के हिंदी पर्याय के रुप में किया जाता है। प्रत्येक गवेषक अथवा यूँ कहें रिसर्च स्कॉलर कहता है कि मैं अमुक विषय पर रिसर्च कर रहा हूँ, शोध कार्य कर रहा हूँ। आइए आज के इस पत्र के द्वारा गवेषणा शब्द का मूल गाय की खोज करते हैं।
यदि कोई गाय उस गोपालक अथवा गोचारक की दृष्टि से ओझल हो जाती थी तो वह प्रयत्नपूर्वक उसको खोजता था। गाय प्राप्ति के लिए वह जो साधन अपनाता था वह बड़े महत्वपूर्ण तथा दिलचस्प हुआ करते थे। जैसे वह गाय के पद चिह्नों का अनुसरण करता था और अन्ततोगत्वा उसे गाय की प्राप्ति हो जाती थी। कतिपय विद्वान भारतीय शोध प्रवृत्ति के मूल में गाय को खोजना मानते हैं। वस्तुतः यह सत्य है की गाय की खोज को गवेषणा कहा जाता है किंतु यहां पर गौ शब्द का अर्थ सास्नादिमान पिंडविशेषः गौः नहीं है (गाय की गर्दन के नीचे जो मांस की झालर सी लटकती रहती है उसे गलकंबल अथवा सास्ना कहते हैं और यह गलकंबल ही गाय को अन्य प्राणियों से इतर सिद्ध करता है)
अस्तु हमें भारत की समृद्ध परंपरा को जानने हेतु गवेषणा शब्द का मूल अर्थ समझने हेतु निरुक्तकार यास्क के निघण्टु की शरण में जाना होगा। इस महनीय ग्रंथ में तत्र गौः इत्येकः शब्दः तस्य एकविन्शतिः नामानि ऐसा कहा है। चलिए वेदों में प्रयुक्त गौः शब्द से आरंभ होने वाले पृथ्वी वाचक 21 शब्दों की ओर दृष्टिपात करते हैं। वहाँ पर कहा गया है :–
आदितः एकविंशतिः पृथिवी नामधेयानि
ऊँ, गौः, ग्मा, ज्मा, क्ष्मा, क्षा, क्षमा, क्षोणिः, क्षितिः, अवनिः, उर्वी, पृथ्वी, मही, रिपः, अदितिः, इला, निर्ऋतिः, भूः, भूमिः, पूषा, गातु, गोत्रा।
वस्तुतः आचार्य ने इन शब्दों का परिगणन पृथ्वी के अर्थो में किया है किंतु यदि हम सूक्ष्म विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि ये सभी शब्द गवेषणा की ओर इंगित हो रहे हैं। आईए विचारणा करते हैं। सबसे पहले हम गौ

शब्द को लेते हैं। इसके बारे में आचार्य यास्क लिखते हैं :– गौरिति पृथिव्या नामधेयं यदुदूरं गता भवति यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति... यहाँ वे स्कंद स्वामी के मत को भी उद्धृत करते हैं। यद्यपि उन्होंने यहाँ पर पृथ्वी के अर्थ में ही गौ शब्द की व्याख्या की है। उनके मतानुसार गौ पृथ्वी का एक नाम है क्योंकि यह दूर तक जाती है। अथवा इसमें प्राणी दूर तक जाते हैं। अथवा आत्मा और आकाश के समान इसकी उपलब्धि गति एवं क्रिया के रूप में दूर तक होती है। जैसे कोई परिव्राजक दूर तक जाता है वैसे ही यह गाय दूर तक जाती है और इसकी स्तुति की जाती है, इसका चिंतन किया जाता है अथवा इस पृथ्वी पर रहकर ही हम स्तुति करते हैं।

उपर्युक्त अर्थों का सूक्ष्मरीति से परीक्षण करने पर हम पाएंगे कि वास्तव में गवेषणा में, अनुसंधान में, शोध में ऐसा ही होता है। गवेषणा बड़ी दूर की कौड़ी है, यह बड़ी दूर तक जाती है, इसमें गवेषक दूर तक अन्वेषण करते हैं। जैसे आत्मा एवं आकाश तथा पृथ्वी की उपलब्धि असीम है उसी प्रकार गवेषणा का क्षेत्र, अन्वेषण का क्षेत्र, शोध का क्षेत्र अनंत है। जैसे कोई परिव्राजक या संन्यासी दूर तक चलता रहता है उसी प्रकार गवेषक को भी चाहिए कि वह गवेषणा में सतत सक्रिय रहे, रुके नहीं, ऐसा करने पर उसकी गवेषणा, उसका शोध उसका अन्वेषण चहुं ओर स्तुतियोग्य होगा। उसकी प्रशंसा भी होगी, आलोचना भी होगी, समालोचना भी होगी।

ग्मा शब्द भी उपर्युक्त अर्थ को ही इंगित करता है।

ज्मा इस शब्द के बारे में चिंतन करते हुए आचार्य यास्क लिखते हैं :– अदन्ति वास्यां भूतानि जातानि वा स्वकारणात्, जायन्ते वास्या औषधयः (तै०उ० २,१)

अर्थात इसमें सभी प्राणी खाना खाते हैं, उत्पन्न होते हैं, इसमें औषधि उत्पन्न होती हैं। उपर्युक्त तथ्य विचारणीय है। गवेषणा के उपरांत भी जो नियम बनते हैं उनका उपयोग करके सभी प्राणी अपना कल्याण करते हैं। गवेषणा से नए–नए आयाम उत्पन्न होते हैं। जब यह गवेषणा चिकित्सा के क्षेत्र में की जाती है तो इससे औषधियाँ बनाई जाती हैं।

क्ष्मा, क्षा, क्षमा, क्षोणिः एवं क्षितिः शब्दों का विश्लेषण करते हुए आचार्य यास्क लिखते हैं :–

क्षियन्ति निवसन्त्यस्यां.....स्वकीयकाले। गवेषणा के द्वारा मानव मात्र के शत्रु सभी पदार्थ रोगाणु, वायरस इत्यादि की हिंसा की जाती है अर्थात उन्हें नष्ट करने के उपाय दवाइयाँ खोजी जाती हैं। यह मनुष्य को भार मुक्त करती है, समस्या रहित करती है।

निरुक्त में एक और शब्द प्राप्त होता है अवनि अवति प्रजाः अव्यन्ते वा भूपैः। यह गवेषणा मनुष्यों की रक्षा करती है, हमें समर्थ बनाती है। उर्वी रूप में हमें आच्छादित करती है। सभी प्रकार की सुख सुविधा प्रदान करती है। पृथ्वी रूप में यह गवेषणा प्रथनात् पृथिवी अर्थात् यह गवेषणा कभी भी संकुचित नहीं रहती अपितु एक फैलाव को, विस्तार को विभिन्न गवेषकों के माध्यम से प्राप्त करती रहती है।

मही मह पूजायाम् अच्छी एवं सटीक गौः की समाज में पूजा होती है। अपने गुणों से गवेषणा की कीर्ती गवेषक सहित दिग्दिगान्तर तक प्रसारित होती है।

रिपः आलपन्त्यस्यां प्राणिनः इति रिप् जसि रिपः रिप रुप में यह गौ, यह गवेषणा गवेषकों के परस्पर विचारों का माध्यम बनती है, इस रूप में गवेषक परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

अदिति दीङ् क्षये से अदिति शब्द बनता है जिसका अभिप्राय होता है अमर। गवेषणा अमर होती है। यह गवेषक को अमर बना देती है। कभी भी नष्ट नहीं होती। इतिहास साक्षी है कि मनुष्य नष्ट हो जाता है लेकिन शब्द नित्य हैं, हमेशा रहते हैं। इसीलिए अग्नि पुराण में कहा गया एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति। इसीलिए अंग्रेजी में रिसर्च शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ होता है पुनः अन्वेषण। गवेषणा की यह शब्द यात्रा इला शब्द पर पहुंचती है। इला शब्द ईड स्तुतौ, ञिइन्धी दिप्तौ धातुओं से बनता है जिसका अर्थ होता है गवेषणा। गवेषणा जब एक ग्रंथ के रुप में प्रकाशित होती है तो गवेषक सहित प्रकाशकों की भी स्तुति समाज में होती है। इला अणु का भी वाचक है और अन्न का भी वाचक है। भारतीय परंपरा में अन्नम् वै विष्णुः ऐसा कहा जाता है इसलिए यह इला उस व्यापनशील विष्णु का भी बोधक होती है। इससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि गवेषणा का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत एवं संपूर्ण ब्रह्मांड को अपनी परिधि में धारण करने वाला होता है। इसीलिए भारत में कहा जाता है कि भगवान कण–कण में व्याप्त है।

निर्ऋति शब्द के विषय में निरुक्त में निर्ऋतिः निरमणात् ऐसा उल्लेख मिलता है जोकि गवेषक को निश्चल होकर के गवेषणा करनी चाहिए, ऐसा निर्देश करता है।

भूः तथा भूमि शब्द भू सत्तायाम् धातु से बनता है जो कि गवेषक को निर्देशित करता हुआ प्रतीत होता है कि उसकी गवेषणा की सांसारिक स्थिति हमेशा बनी रहे। अथवा एक गवेषक के मन में यह भाव कभी भी उत्पन्न नहीं होना चाहिए कि ऐसा नहीं होता या ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि गवेषणा की प्रकृति तटस्थ होनी चाहिए और यह सतत संभावनाओं को पुष्ट करने वाली होनी चाहिए।

पूषा पुष् पुष्टौ धातु से बनने वाला यह शब्द हमें इंगित करता है कि उपर्युक्त गुणों से जब हमारी गवेषणा पुष्ट

होगी तो वह यास्काचार्य के निर्देशानुसार ''धारयति सर्वाणि भूतानि पोषयत्याभरणानि च।'' के अनुसार गवेषक को सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त करवाएगी।

अग्रिम शब्द है गातुः जो कि गाङ् स्तुतौ धातु से बनता है। गातु मार्गवती हि भूमिः मार्ग युक्त भूमि को गातु कहा जाता है। हमारी गवेषणा हमारे साथ–साथ अन्य उत्तरवर्ती गवेषणा करने वाले व्यक्तियों का भी मार्ग प्रशस्त करने वाली होनी चाहिए।

गोत्रा शब्द गुङ् अव्यक्ते शब्दे धातु से बना है जिसका गवेषणा के संदर्भ में अर्थ होगा की गवेषक को चाहिए कि वह केवलमात्र उन सूक्ष्म विषयों का भी अध्ययन करें जो मानवीय बुद्धि से अभी तक अव्यक्त हैं, उनका चिंतन करें। उन प्रछन्न रहस्यों को खोजने का प्रयास करें जिन विषयों को सभ्य मानव समाज ने अभी तक नहीं जाना है। उन सभी विषयों को जानने का प्रयास गवेषक को करना चाहिए तभी हम सच्चे अर्थों में गवेषणा कर पाएंगे, अनुसंधान कर पाएंगे तथा प्रतीकात्मक रुप में हमारी गाय, हमारी पृथ्वी का कल्याण कर पाएंगे। और हाँ, जो वेदोक्त हेमादि 15 प्रकार के हिरण्य (सुवर्णादि पदार्थ) हैं, उनको हम गवेषणा के उपरांत ही प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अग्निपुराण, चौखंबा प्रतिष्ठान, वाराणसी से प्रकाशित।

2. निरुक्त (प्रथम अध्याय), आचार्य यास्ककृत्, चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित।